हिन्दुस्तान
तरक्की को चाहिए नया नजरिया

सिर्फ ₹3.00 में
सोमवार से शुक्रवार *

बुधवार, 31 जनवरी 2018, लखनऊ, पांच प्रदेश, 20 संस्करण, नगर संस्करण www.livehindustan.com वर्ष 23, अंक 26, 26 पेज, मूल्य ₹ 3.00 या ₹ 4.00 नई दिशाएं सहित (ऐच्छिक), माघ शुक्ल पक्ष पूर्णिमा, विक्रम सम्वत् 2074

चन्द्र ग्रहण पर क्या कहता है आयुर्वेद और विज्ञान

चन्द्र ग्रहण में भोजन करने से बीमारियों का खतरा: आयुर्वेद

डॉक्टर शिवशंकर
आयुर्वेद विशेषज्ञ, राजभवन

आयुर्वेदाचार्यों की नजर में चंद्रग्रहण के दौरान पका भोजन करने से बीमारियों का खतरा बढ़ जाता है क्योंकि ग्रहण के दौरान निकलने वाली किरणों से पके भोजन का स्वरूप और स्वाद बदल जाता है। इसलिए भोजन का परहेज हितकर माना गया है। राजभवन में आयुर्वेद के वरिष्ठ डॉक्टर शिवशंकर त्रिपाठी के मुताबिक जो चीज चंद्रमा के एक पूर्ण चक्र के दौरान 28 दिनों में होती है, वह चंद्रग्रहण के दौरान महज दो से तीन घंटे के भीतर घटित होती है। ऐसे में पका भोजन सामान्य दिनों के मुकाबले अधिक तेजी से सड़ता है।

इंफ्रारेड किरणें भोजन को विषाक्त बना देती हैं

वैदिक विज्ञान केन्द्र के प्रभारी व वरिष्ठ वैज्ञानिक डा. भरत राज सिंह ने बताया कि चंद्रग्रहण के दौरान चन्द्रमा से टकराकर पृथ्वी तक आने वाली सूर्य की किरणों में अल्ट्रा वायलेट व इंफ्रारेड किरणें भी शामिल होती हैं। इसमें इंफ्रारेड बहुत खतरनाक होती है जो बहुत अधिक मात्रा में निकलती है। ये किरणें भोजन को विषाक्त बना देती हैं। इसीलिए चन्द्र ग्रहण के दौरान खाना पकाने व खाने से मना किया गया है। चन्द्र ग्रहण समाप्त होने पर स्नान करने व धुले हुए दूसरे कपड़े पहनना चाहिए। इससे शरीर व कपड़ों पर किरणों का प्रभाव समाप्त हो जाता है

ये सावधानियां बरतें

चन्द्र ग्रहण के समय मंदिर के दरवाजे बंद कर देने चाहिए और किसी भी भगवान की मूर्ति को हाथ नहीं लगाना चाहिए। तुलसी व शमी के वृक्ष को भी नहीं छूना चाहिए। क्योंकि इंफ्रारेड किरणों की इसमें समाहित होने की क्षमता अधिक होती है।

- गर्भवती महिलाएं समय घर से बाहर न निकलें।
- भोजन करने, पकाने व सोने से बचें।
- सब्जी काटने, सीने से बचें।